बेहद का वैराग्य - 06

अव्यक्त बापदादा :- (19.11.1984)

➳ _ ➳ सदा वाचा और मंसा दोनों साथ-साथ सेवा में रहे। वर्तमान समय विशेष भारतवासियों का क्या हालचाल देखा? अभी शमशानी वैराग की वृत्ति में हैं। ऐसे शमशानी वैराग वृत्ति वालों को बेहद की वैराग वृत्ति दिलाने के लिए - स्वयं बेहद के वैराग वृत्ति वाले बनो। अपने आपको चेक करो। कभी राग कभी वैराग, दोनों में चलते हैं वा सदा बेहद के वैरागी बने हो? बेहद के वैरागी अर्थात् देह रूपी घर से भी बेघर। देह भी बाप की है न कि मेरी। इतना देह के भान से परे।

➳ _ ➳ बेहद के वैरागी कभी भी संस्कार, स्वभाव, साधन किसी के भी वशीभूत नहीं होंगे। न्यारा बन, मालिक बन साधनों द्वारा सिद्धि स्वरूप बनेंगे। साधन को विधि बनायेंगे। विधि द्वारा स्व-उन्नति की वृद्धि की सिद्धि पायेंगे। सेवा से वृद्धि की सिद्धि प्राप्त करेंगे। निमित्त आधार होगा लेकिन अधीन नहीं होंगे। आधार के अधीन होना अर्थात् वशीभूत होना। वशीभूत शब्द का अर्थ ही है, जैसे भूत आत्मा परवश और परेशान करती है, ऐसे किसी भी साधन वा संस्कार वा स्वभाव वा सम्पर्क के वशीभूत हो जाते तो भूत समान परेशान और परवश हो जाते हैं।

➳ _ ➳ **बेहद के वैरागी, सदा करावनहार करा रहे हैं, इसी मस्ती में रमता योगी से भी ऊपर-उड़ता योगी होगा।** जैसे हद के हठयोग की विधियों से धरनी, आग, पानी सबसे ऊंचा आसनधारी दिखाते हैं। उसको योग के सिद्धि स्वरूप मानते हैं। वह है अल्पकाल के हठयोग की विधि की सिद्धि। ऐसे बेहद के वैराग वृति वाले इस विधि द्वारा देह भान की धरनी से ऊपर माया के भिन्न-भिन्न विकारों की अग्नि से ऊपर, भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा संग के बहाव में आने से न्यारे बन जाते हैं। जैसे पानी का बहाव अपना बना देता है, अपनी तरफ खींच लेता है। ऐसे किसी भी प्रकार के अल्पकाल के बहाव अपने तरफ आकर्षित न करें। ऐसे पानी के बहाव से भी ऊपर इसको कहा जात - 'उड़ता योगी'। यह सब सिद्धियाँ बेहद के वैराग की विधि से प्राप्त होती हैं।

➳ _ ➳ बेहद के वैरागी अर्थात् हर संकल्प, बोल और सेवा में बेहद की वृत्ति, स्मृति, भावना और कामना हो। हर संकल्प बेहद की सेवा में समर्पित हो। हर बोल में नि:स्वार्थ भावना हो। हर कर्म में करावनहार करा रहे हैं-यह वायब्रेशन सर्व को अनुभव हो। इसको कहा जाता है - 'बेहद के वैरागी'।

➳ _ ➳ **बेहद के वैरागी अर्थात् अपनापन मिट जाए। बाबा-पन आ जाए।** जैसे अनहद जाप जपते हैं, ऐसे अनहद स्मृति स्वरूप हो। हर संकल्प में, हर श्वास में बेहद और बाबा समाया हुआ हो। तो हद के वैरागी, शमशानी वैरागी आत्माओं को वर्तमान समय शान्ति और शक्ति देवा बन बेहद के वैरागी बनाओ।

➢➢ बेहद के वैरागी

➳ _ ➳ **बेहद के वैरागी अर्थात् देह रूपी घर से भी बेघर**

→ देह भी बाप की है न कि मेरी, इतना देह के भान से परे

■ जिस देह में लम्बे समय जन्म से रहते हैं उस देह से भी बेघर बनना है

▶ **ये भगवान की दी हुई अमानत है**

▶ **ईश्वरीय सेवा के लिए है**

▶ **इस देह में हम मेहमान हैं**

▶ **ये प्रभु की प्रॉपर्टी है, प्रभु प्रसाद है**

▶ भक्ति में गाते थे- तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा

➳ _ ➳ **<u>बेहद के वैरागी कभी भी संस्कार, स्वभाव, साधन किसी के भी वशीभूत नहीं होंगे</u>**

→ लम्बे समय से जिन संस्कारों के वश चलते आ रहे थे, जिनको अपना स्वभाव-संस्कार मान लिया था वो आपके नहीं है, वो माया के, रावण के हैं, इनसे वैराग लाना है

- जो बाप के संस्कार वो हमारे संस्कार हैं

→ साधनों के भी वशीभूत नहीं होंगे, अधीन नहीं होंगे

- उनको यूज़ करेंगे लेकिन मालिक बनकर
  - ▸ न्यारे-प्यारे बनकरके साधनों को यूज करेंगे
- हम सबके जीवन का लक्ष्य है पुरुषार्थ कर बाप समान बनना, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना
  - ▸ इसके लिए जो साधन हैं उनको विधि के रूप में यूज़ करना है लगाव या आसक्त होकर नहीं
  - ▸ जो सेवा करते हैं चाहे वाचा, कर्मणा वो भी साधन है, हमारे श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त कराने के लिए

→ निमित्त आधार होगा लेकिन अधीन नहीं होंगे

- जो भी साधन मिलें हैं उनको निमित्त बनकर यूज करना है उनके अधीन नहीं होना है
- साधनों से सुख भी मिलता है, हमें ये लक्ष्य रखना है की जो भी साधन हैं वो साधना में सहयोगी बने, ना की उन साधनों से हमें सुख लेना है
  - ▸ **<u>सुख लेना है सिर्फ एक बाप से जिससे अविनाशी सुख मिलता है</u>**

→ आधार के अधीन होना अर्थात् वशीभूत होना

- अगर साधनों के सुख को हम रियल मानकर चलते हैं तो उनके वशीभूत हो जाते हैं
- अगर किसी कारणवश साधन हमारे पास नहीं होते तो भूत समान बेचैन होते, परेशान होते हैं

➳ _ ➳ **<u>बेहद के वैरागी, सदा करावनहार करा रहे हैं, इसी मस्ती में रमता योगी से भी ऊपर-उड़ता योगी होगा</u>**

→ बाबा का वरदान- ‘करन करावनहार की स्मृति से लाइट के ताजधारी बेफिक्र बादशाह भव’

- **<u>मैं निमित्त करनहार योगी हूँ, करावनहार बाप है इस स्मृति से सहज ही लाइट के ताजधारी, बेफिक्र बादशाह बन जाते हैं</u>**
  - ▸ **<u>यदि किसी कारण से, किसी व्यर्थ भाव के वश यदि बोझ को अपने ऊपर ले लेते हैं तो लाइट के ताज के बजाय अनेक प्रकार की फ़िक्र की टोकरियाँ सर पर आ जाती हैं</u>**
- रमता योगी अर्थात रमन करने वाले, इधर से उधर

- हद के हठयोगी हठयोग के माध्यम से सिध्दी प्राप्त कर लेते हैं, उससे कमाल दिखाते हैं- पानी के ऊपर चलना, आग के ऊपर चलना उसकी सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं

- **बेहद के वैरागी अपनी साधना में रहकर ऐसी सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं जो देह में रहते हुए देह की धरनी से ऊपर रहते हैं**

- जिन विकारों की अग्नि में सारा संसार जल रहा है, झुलस रहा है, तो आप उस अग्नि से ऊपर रहते हो

- जैसे पानी का बहाव में एक हो जाते हैं ऐसे ही साधन भी बहाकर ले जाते हैं, उसके अधीन बन जाते हैं

- बेहद के वैरागी इन साधनों के अधीन नहीं होते हैं, साधन अल्पकाल के लिए होते हैं

- इन सभी सिद्धियों को प्राप्त करने की विधि है बेहद की वैराग वृत्ति

➳ _ ➳ **बेहद के वैरागी अर्थात् हर संकल्प, बोल और सेवा में बेहद की वृत्ति, स्मृति, भावना और कामना हो**

→ हर संकल्प, बोल और सेवा में बेहद की वृत्ति हो, सर्व के कल्याण के लिए हों

- हर बोल निस्वार्थ भावना वाले हों
- मैं निमित्त बन कार्य कर रहा हूँ, कराने वाला बाप है

➳ _ ➳ **बेहद के वैरागी अर्थात् अपनापन मिट जाए। बाबा-पन आ जाए**

→ **बाबा ने जो भी खजाने दिए हैं, सम्बन्ध, पदार्थ, साधन, सुविधाएँ जो कुछ भी हैं उनके प्रति अपनापन ना हो की ये मेरा है, लगाव का भाव ना हो**

- ये बाप की दी हुई अमानत है, इस भाव से उसको यूज करें

- **हर बात में बाबापन आ जाये**
- ये देह रूपी घर बाबा का है मेरा नहीं

- **हर संकल्प, हर श्वास में बेहद की भावनाएं, बेहद की दृष्टि, बेहद की वृत्ति, बेहद की कामना हो और बाबा समाया हुआ हो**

- पहले स्वयं को बेहद का वैरागी बनाओ फिर दुनिया में जो हद के, शमशानी वैरागी हैं, किसी कारण से उनको वैराग आया हुआ है उन आत्माओं को बेहद के वैरागी बनाओ

- वर्तमान समय उनको जो शांति और शक्ति की जरूरत है वो उनको प्राप्त कराओ

➢➢ वैराग शतकम- श्लोक 21

➳ _ ➳ अज्ञानवश पतंग दीपक की लौ पर गिरकर भस्म कर लेता है, क्योंकि वह उसके परिणाम को नहीं जानता... इसी तरह मछली कांटे के मास पर मुंह चलाकर अपने प्राण खोती है, क्योंकि वह उससे अपने प्राणनाश की बात नहीं

जानती... परन्तु हमलोग तो अच्छी तरह जानबूझकर भी विपद मूलक विषयों की अभिलाषा नहीं त्यागते, मोह की महिमा कैसी विस्मयकर है...

→ एक पतंग या परवाना को ज्ञान नहीं है की इस पर गिरने से मेरी मौत हो जाएगी

→ मछली को पता नहीं है कांटा हैं मास खाने को जाती है परन्तु फंस जाती है

→ **मनुष्य जिसे भगवान ने समझ दी है जो जानता है की विषयों की कामना आफत की जड़ है, विषयों में सुख नहीं है, घोर विपद (दुःख,कष्ट) है, विष से भी अधिक दुःखदायी है, उसकी इच्छा करना अधिक दुःखदायी है, वो कामनाएं ही उसे जलाती है**

→ एक है जो प्राप्त है उसे भोग लेना परन्तु जो है नहीं उसकी कामना करना, उसके लिए परेशान करना, यत्न करना वो और अधिक विषदायक है

→ इसके लिए कहना पड़ता है की मोह की माया बड़ी ही कठिन है

- **जैसे मछली और परवाना अज्ञानवश फंस जाते हैं उसी तरह हम ज्ञान होते हुए भी फंस जाते हैं विषय, भोग विलास की वस्तुओं में**
    - ये भी एक मृत्यु ही है, पता है ये नहीं करना है परन्तु फिर भी करते हैं
    - फिर छोटा दाग छिपाते-छिपाते बड़ा दाग बन जाता है, चलाते-चलाते और गहरा हो जाता है, फिर दिल फाड़-फाडकर रोते हैं
    - फिर पश्चाताप करते हैं, वो पश्चाताप एक सेकंड भी एक वर्ष के समान लगता है, वो चिल्लाना दर्दनाक होगा, वो दृश्य विनाश के दृश्य से भी दर्दनाक होगा

➳ _ ➳ बाबा ने कहा था - 'बेहद के वैरागी बनकर रहो, साधनों के वशीभूत ना हो'

→ परन्तु फिर भी हो गए.. पहचान नहीं सके माया को, माया किस रूप में आई पहचान नहीं सके और फंस गए और मर गए

- **वो भी एक मृत्यु ही है, स्थिति का नीचे गिर जाना ये भी सजाएँ हैं, स्थिति गिर जाना यही सजा है, फाइन है**

➳ _ ➳ साधनों में सुख नहीं, विषयों में सुख नहीं, संसार की किसी वस्तु में सुख नहीं जबकि संसार ही असार है

→ **सुख एक सुख के सागर में है, शांति एक शांति के सागर में है, आनंद एक आनंद के सागर में है**

- **इस भाव को अपने अतंस मन में गहरा छापना है, अंकित करना है की संसार में सुख नहीं है**
- जहाँ मैं सुख ढूंढ रहा हूं वहां सुख नहीं है
- **ना तो विषयों में, ना तो वस्तुओं में, ना तो साधनों में, ना तो वैभवों में और ना ही हद के नाम, मान और शान में**
    - कोई कितनी भी महिमा करे वो अल्पकाल की है

- कितना भी नाम हो जाए इस संसार में वो भी अल्पकाल का है
- सच्चा सुख और सच्चा नाम यहाँ है और कहीं नही

- <u>इस भाव को अपने अन्दर में प्रवेश करने देना है</u>

→ बिना उस कर्ता के इस संसार से छूटा नहीं जा सकता

→ इस संसार को समझना है, बाबा जो शिक्षा दे रहा है उन शिक्षाओं को समझना है

→ **<u>निरंतर वैराग वृत्ति में रहना है, कभी-कभी वाली नहीं, श्मशानी वैराग नहीं</u>**

→ शमशानी वैराग, मरकट वैराग- थोड़े समय के लिए वैराग

- <u>निरंतर वैराग हो- जो उस गिद्ध की तरह ना हो जो उड़ता तो बहुत ऊपर आकाश में है पर उसका ध्यान नीचे मॉस की तरफ होता है</u>
- <u>अध्यात्म में ऊँचा उठ रहा है पर देह की आसक्ति से मुक्त नहीं हुए हैं</u>
  - <u>अशरीरीपन का अभ्यास कर रहे हैं परन्तु फिर से देह के संकल्प आते हैं, देह को देखने के</u>
  - देह के भोग के, देह की इच्छाओं के, देह की वासनाओं के
- <u>हमारा वैराग बेहद का है, ऊँचा वैराग है, सच्चा वैराग्य है, मन का वैराग्य है, सबके बीच में हैं परन्तु अनासक्त हैं</u>
  - होते हुए दूर रहना, किसी से भी आसक्त नहीं
  - जहाँ-जहाँ मोह है, जहाँ-जहाँ राग है वहां-वहां वैराग उत्पन्न करना है
  - हर व्यक्ति एक, दो, तीन या ज्यादा व्यक्ति या वस्तुओं से आसक्त है
  - <u>जहाँ आसक्त है वहां वैराग भाव धारण करना है, वहां प्यार, स्नेह वाला भाव ना हो, वहां काली का अवतार धारण करना है, भले उस व्यक्ति को बुरा लगे</u>
  - क्योंकि वो व्यक्ति ही तुम्हारा weakness है
  - <u>महाकाली का रूप धारण करना है वैराग की तलवार निकालकर काट दो, नहीं तो उस मोह से मुक्त नहीं होंगे</u>
  - राग को विराग में परिवर्तन करना है क्योंकि वही एक बाधा, एक कमजोरी रह गई है, उसको भी खत्म कर दो